Insaan [Hindi]

Tabassum Saifi

MSc Student, Nuclear Medicine, AIIMS Delhi
Corresponding Author:
Tabassum Saifi
Department of Nuclear Medicine
AIIMS, Delhi, India
Email: tabassumsaifi1396 at gmail dot com

Received: 14-APR-2020 Accepted: 18-APR-2020 Published Online: 18-APR-2020

वो अक़्सर कहते हैं वक़्त बदलता है,
लेकिन अफ़सोस ये अच्छा है,
या बुरा, हालात बताते हैं।
मैंने अक्सर लोगों को बदलते देखा है,
अच्छे को बुरा,
बुरे को अच्छा होते देखा है।

वक़्त को धीमें,
इंसानों को रफ़्तार पकड़ते देखा है।
वक़्त के ज़ख़्म को भरते,
इंसानों को ज़ख़्म देते देखा है।
वक़्त तो सिर्फ़ एक बार जान लेता है,
इंसानों को हर पल जान लेते देखा है।

वक़्त को वफ़ादार,
लोगों को बेवफ़ा बनते देखा है।
दिल टूटे तो जुड़ जाते हैं वक़्त के साथ,
पर टुटे हुए इंसान को बिखरते हुए देखा है।
वक़्त की सुई को बेशक़ीमती,
साँसों को कोड़ी के दाम देखा है।

मैंने ग़ैरों को क़रीब ,
अपनों को नज़रंदाज़ होते देखा है।
दिल तो बहुत छोटी सी चीज़ है,
मैंने पल पल इंसान को टूटते हुए देखा है।
वक़्त को तो समेट लेते हैं लोग,
मैंने इंसानों को रेत होते हुए देखा है।

Cite this article as: Saifi T. Insaan [Hindi]. RHiME. 2020;7:43-4.

वक़्त तो यूँ ही बदनाम है साहब,
अक़्सर इंसान बदलता है।
वक़्त की तो सिर्फ़ कुछ सुईं हैं,
इंसान को हज़ार मुखोटे हटाते देखा है।
वक़्त तो पाएबन्द है अपने वादे पर,
इंसान को वादे तोड़ते हुए देखा है।

वक़्त की मार से सम्बल जाते हैं लोग,
लोगों की मार से साँसों को बिखरते हुए देखा है।

Acknowledgment: This poem was one of the submissions to "Lockdown Diaries: The COVID Contract" hosted online by Parwaaz, the poetry society of University College of Medical Sciences, University of Delhi, in April 2020